(014-351) WK 02

14 SATURDAY ~~JANUARY~~

प्रजातीय वर्गीकरण Racial classification

यदी हम पृथ्वी पर रहने वाली विभिन्न प्रजातियों के प्रमुख प्रारूप (Racial Types) को प्रजातीय वर्गीकरण का आधार माने तब भी विभिन्न विद्वानों के परस्पर विरोधी निष्कर्ष एक भ्रमपूर्ण स्थिति में डाल देते हैं उदाहरणतः 18वीं शताब्दी में लीनियस ने समस्त मानव प्रजातियों को क्षेत्रीय आधार पर चार भागों में विभाजित किया था – (i) अमेरिकी प्रजाति (ii) यूरोपीय प्रजाति (iii) एशियन प्रजाति (iv) अफ्रीकन प्रजाति। 19वीं शताब्दी में जर्मन विद्वानों ने समस्त प्रजातियों की संख्या पाँच निश्चित की जबकि कुछ विचारकों के अनुसार इनकी संख्या 15 से भी अधिक है। यदी हम वैज्ञानिक रूप से स्वयं ही प्रजातियों का वर्गीकरण करना चाहें तब भी अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं:–

→ प्रजातीय वर्गीकरण में कठिनाइयाँ (Difficulties in Racial classification) →

(i) पर्यावरण का प्रभाव → प्रजातियों का वर्गीकरण उनकी शारीरिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाता है लेकिन कठिनता से ही कोई शारीरिक लक्षण ऐसा होता है जिस पर पर्यावरण का प्रभाव बिलकुल भी न पड़ता हो। इस प्रकार भिन्न पर्यावरण में रहने से एक प्रजाति के सदस्यों की शारीरिक

15 SUNDAY विशेषताओं में कुछ भिन्नता आ जाती है।

(ii) प्रजातियों का मिश्रण → सभ्यता में विकास होने के साथ ही एक प्रजाति को दूसरी प्रजाति के अधिक निकट आने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हुए हैं। इनके फलस्वरूप विभिन्न प्रजातियों में निरन्तर मिश्रण हो रहा है। मिश्रण के परिणामस्वरूप जो नये संयोग सामने आते हैं वे दोनों मूल प्रजातियों में से किसी के समान नहीं होते। यहां यह समस्या आती है कि इसे मूल प्रजाति से सम्बद्ध रखें या एक नवीन समूह माना जाय।

2017

(iii) सामान्य लक्षण → कुछ शारीरिक लक्षण इस प्रकार के होते हैं जो दो प्रजातियों में सामान्य होते हैं। ऐसी स्थिति में यह पता लगाना बहुत कठिन होता है कि एक प्रजाति की शारीरिक विशेषताएं किस सीमा पर समाप्त होती हैं और दूसरी प्रजाति की विशेषताओं का आरम्भ किस सीमा से होता है।

इन कठिनाइयों के होते हुए भी संसार की कुछ प्रमुख प्रजातियों और उनकी प्रमुख शारीरिक विशेषताओं की विभिन्न वर्गीकरणों की सहायता से समझा जा सकता है।—

classification by Kroeber
क्रोबर का वर्गीकरण

कॉकेशायड प्रजाति	मंगोलॉयड प्र०	नीग्रॉयड प्र०
1 Caucasoid R.	Mongoloid R.	Negroid R.
2 नॉर्डिक (Nordic)	- मंगोलियन	- नीग्रो
- अल्पाइन (Alpine)	- मलेशियन	- मलेनीशियन
3 भूमध्यसागरीय (Mediterranean)	- अमेरिकन इण्डियन	- पिग्मी ब्लैक
- हिन्दू		- बुशमैन

classification by Hoebel
हॉबेल का वर्गीकरण

कॉकेशॉयड प्र०	मंगोलॉइड प्र०	नीग्रॉयड प्र०
- नॉर्डिक	- एशियाटिक	- अफ्रीकन
- भूमध्यसागरीय	- ओशानिक	- ओशानिक
- अल्पाइन	- अमेरिकन इण्डियन	- नीग्रिटो

इनके अतिरिक्त हर्सकोविट्स, हॉइजर, हक्सले तथा मजूमदार ने भी अपने-अपने दृष्टिकोण से प्रजातियों का वर्गीकरण किया है।

सभी मानवशास्त्री इस विषय पर एकमत हैं कि सभी प्रजातियों को काकेशायड, मंगोलॉयड और नीग्रॉयड वर्गों में विभाजित किया जाना चाहिए।

⇒ **कॉकेशायड प्रजाति** → इनकी संख्या सबसे अधिक है 120 करोड़ है। कॉकेशायड प्रजाति और उसकी उप-प्रजातियाँ यूरोप से लेकर एशिया तक फैली हुई है। यद्यपि यूरोप, अमरीका और आस्ट्रेलिया को श्वेत प्रजातियों का मुख्य केन्द्र माना जाता है। लेकिन अनेक प्रमाणों के आधार पर यह कहना गलत नहीं होगा कि उनकी उत्पत्ति और विकास एशिया से ही सम्बन्धित है। विद्वान इस बारे में एकमत नहीं हैं कि किस प्रजाति को कॉकेशायड प्रजाति का सर्वोत्तम प्रतिनिधि माना जाय। कुछ व्यक्ति स्कैण्डीनेविया के निवासियों को इसका वास्तविक प्रतिनिधि मानते हैं, जबकि कुछ विद्वान नॉर्डिक प्रजाति को सबसे अधिक महत्व देते हैं। कून ने बताया कि यूरोप में सबसे पहले अल्पाइन प्रजाति के सदस्यों ने प्रवेश किया, इसलिए अल्पाइनों को ही कॉकेशायड प्रजाति का वास्तविक प्रतिनिधि स्वीकार करना चाहिए। वास्तव में किसी उप-विभाग को प्राथमिकता के दृष्टिकोण से देखने पर हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते।

कॉकेशायड प्रजाति की प्रमुख शारीरिक विशेषताएँ:—

लम्बा और कुछ चौड़ा सिर, लम्बा और पतला मुख, लम्बी और पतली नाक, होंठ सीधे और लहरदार बाल, सुनहरा अथवा भूरापन लिये हुए काले बाल, नीली अथवा भूरापन लिए हुए काली आँखे, त्वचा का सफेद अथवा जैतूनी बादामी रंग तथा लम्बा अथवा औसत से अधिक लम्बा कद। व्यर्थ के विवाद में न पड़कर हमें किसी भी उस मानव समूह को कॉकेशायड प्रजाति में सम्मिलित कर लेना चाहिए जिनमें उपर्युक्त शारीरिक विशेषताएँ पायी जाती हैं।

⇒ मंगोलॉयड प्रजाति → यह प्रजाति एशिया में चीन, साइबेरिया

मलाया और प्रशान्त महासागर के द्वीप-समूहों में फैली हुई है। यद्यपि इसका प्रतिनिधित्व उत्तरी-दक्षिणी अमरीका की कुछ जनजातियों में भी पाया जाता है। मंगोलॉयड प्रजाति तीन प्रमुख शाखाओं में बंटी हुई है-

(i) साइबेरिया, उत्तरी चीन, जापान, और तिब्बत → सबसे स्पष्ट प्रतिनिधि

(ii) मलाया → सामान्य विशेषताओं का प्रतिनिधित्व

(iii) उत्तरी-दक्षिणी अमरीका की रेड इण्डियन → जिनमे मंगोलॉयड के साथ श्वेत और आस्ट्रेलॉयड प्रजाति का मिश्रण पाया जाता है।

इस प्रजाति में मुख्यतः चौड़ा सिर, मोटी और चपटी नाक, गाल की हड्डी पर माँस का जमाव, मध्यम होंठ, सीधे और पतले बाल, आँखों का गहरा बादामी रंग, पीलापन लिये हुए बादामी रंग की त्वचा, मध्यम कद, शरीर पर बालों की न्यूनतम मात्रा और अधखुली आँखें प्रमुख शारीरिक विशेषताएँ हैं।

→ नीग्रॉयड प्रजाति → ~~[illegible]~~ इनकी संख्या अन्य से काफी कम है यह प्रजाति और इनसे सम्बन्धित उप-प्रजातियाँ अफ्रीका से लेकर प्रशान्त महासागर के अनेक द्वीपों तक फैली है। इसके तीन प्रमुख स्वरूप है:- (i) नीग्रो → जो अफ्रीका के पश्चिमी तट पर विषुवत रेखा के आस-पास फैले हुए हैं।

(ii) नीग्रिटो → इनकी शारीरिक विशेषताएं नीग्रो के समान है फिर भी इनका कद बहुत छोटा और माथे की बनावट बचकानी जिन्हें अफ्रीकी बौने, पिग्मी या बुशमैन भी कहते हैं।

(iii) ओशीनिया → ओशीनिया कहे जाने वाले द्वीप समूह में फैला है। जिसमें आस्ट्रेलिया, मैलेनीशिया, इण्डोनेशिया, माइक्रोनेशिया और पालीनेशिया शामिल है।

-नीग्रॉयड विशेषताएं सबसे अधिक मैलेनीशिया, जिसमें हम न्यूगिनी, न्यू आयरलैण्ड, न्यू ब्रिटेन, सालोमन्स और फीजी द्वीप को सम्मिलित करते हैं।

शारीरिक विशेषताएं → मोटी-चौड़ी और चपटी नाक, लम्बा सिर, चौड़ा और आगे की ओर निकला हुआ मुख, मोटे-लटके होंठ, ऊनी घुंघराले बाल, काले-बादामी रंग, लम्बे से छोटा कद, संकीर्ण गोलाकार माथा और दोनों ओर निकले जबड़े आदि।